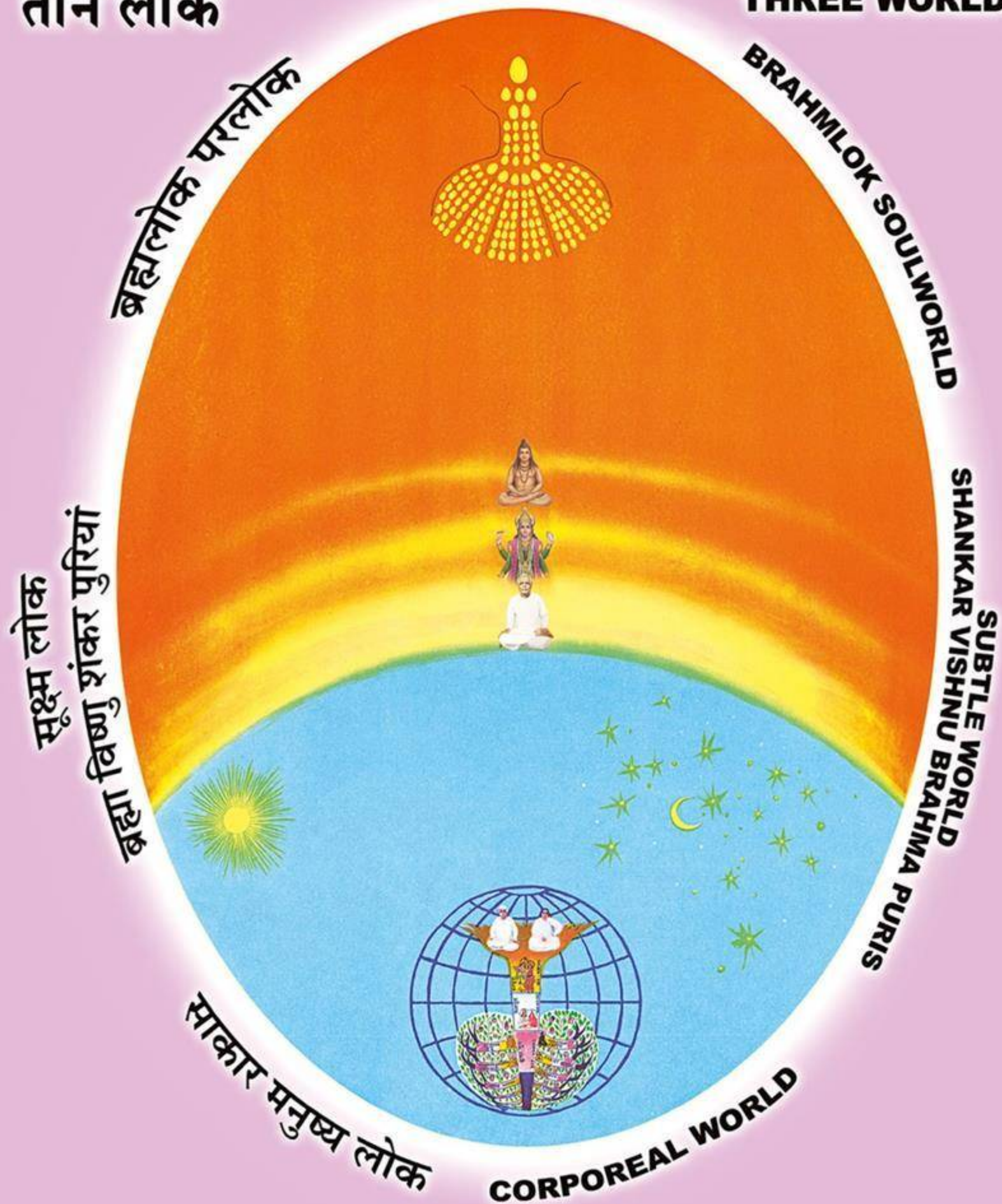


# परमात्मा परमधाम निवासी है

तीन लोक

THREE WORLDS



शिव भगवानुवाच:-

“ हे वत्सो ! मैं इस जगत में व्यापक नहीं, मैं तो इस मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज रूप सूर्य, चाँद और सितारों से भी पार परमधाम का वासी हूँ। मैं कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि अर्थात् पुरषोत्तम संगम युग पर सर्व को मुक्ति तथा जीवनमुक्ति का वरदान देने के लिये अवतरित होता हूँ। ”

**तीन लोक कौन से है और शिव का धाम कौन सा है ?**

मनुष्य आत्माएं मुक्ति अथवा पूर्ण शान्ति की शुभ इच्छा तो करती है परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं है कि मुक्तिधाम अथवा शान्तिधाम है कहाँ ? इसी प्रकार, परमप्रिय परमात्मा शिव से मनुष्यात्माएं मिलना तो चाहती है और उसी याद भी करती है

परन्तु उन्हें मालूम नहीं है कि वह पवित्र धाम कहाँ है जहाँ से हम सभी मनुष्यात्माएं सृष्टि रूपी रंगमंच पर आई हैं, उस प्यारे देश को सभी भूल गई हैं और और वापिस भी नहीं जा सकती !!

१. साकार मनुष्य लोक – सामने चित्र में दिखाया गया है कि एक है यह साकार 'मनुष्य लोक' जिसमें इस समय हम हैं। इसमें सभी आत्माएं हड्डी- मांसादि का स्थूल शरीर लेकर कर्म करती हैं और उसका फल सुख- दुःख के रूप में भोगती हैं तथा जन्म-मरण के चक्कर में भी आती हैं। इस लोक में संकल्प, ध्वनि और कर्म तीनों हैं। इसे ही 'पाँच तत्व की सृष्टि' अथवा 'कर्म क्षेत्र' भी कहते हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व के अंश-मात्र में है। इसे सामने त्रिलोक के चित्र में उल्टे वृक्ष के रूप में दिखाया गया है क्योंकि इसके बीज रूप परमात्मा शिव, जो कि जन्म-मरण से न्यारे हैं, ऊपर रहते हैं।

२. सूक्ष्म देवताओं का लोक – इस मनुष्य-लोक के सूर्य तथा तारागण के पार आकाश तत्व के भी पार एक सूक्ष्म लोक है जहाँ प्रकाश ही प्रकाश है। उस प्रकाश के अंश-मात्र में ब्रह्मा, विष्णु तथा महदेव शंकर की अलग-अलग पुरियां हैं। इन्स देवताओं के शरीर हड्डी- मांसादि के नहीं बल्कि प्रकाश के हैं। इन्हें दिव्य-चक्षु द्वारा ही देखा जा सकता है। यहाँ दुःख अथवा अशांति नहीं होती। यहाँ संकल्प तो होते हैं और क्रियाएँ भी होती हैं और बातचीत भी होती है परन्तु आवाज नहीं होती।

३. ब्रह्मलोक और परलोक- इन पुरियों के भी पार एक और लोक है जिसे 'ब्रह्मलोक', 'परलोक', 'निर्वाण धाम', 'मुक्तिधाम', 'शांतिधाम', 'शिवलोक' इत्यादि नामों से याद किया जाता है। इसमें सुनहरे-लाल रंग का प्रकाश फैला हुआ है जिसे ही 'ब्रह्म तत्व', 'छठा तत्व', अथवा 'महत्त्व' कहा जा सकता है। इसके अंशमात्र ही में **ज्योतिर्बिंदु** आत्माएं मुक्ति की अवस्था में रहती हैं। यहाँ हरेक धर्म की आत्माओं के संस्थान (Section) हैं।

उन सभी के ऊपर, सदा मुक्त, चैतन्य ज्योति बिन्दु रूप परमात्मा 'सदाशिव' का निवास स्थान है। इस लोक में मनुष्यात्माएं कल्प के अन्त में, सृष्टि का महाविनाश होने के बाद अपने-अपने कर्मों का फल भोगकर तथा पवित्र होकर ही जाती हैं। यहाँ मनुष्यात्माएं देह-बन्धन, कर्म-बन्धन तथा जन्म-मरण से रहित होती हैं। यहाँ न संकल्प है, न वचन और न कर्म। इस लोक में परमपिता परमात्मा शिव के सिवाय अन्य कोई 'गुरु' इत्यादि नहीं ले जा सकता। इस लोक में जाना ही अमरनाथ, रामेश्वरम अथवा विश्वेश्वर नाथ की सच्ची यात्रा करना है, क्योंकि अमरनाथ परमात्मा शिव यही रहते हैं।

निराकार परम पिता परमात्मा और उनके दिव्य गुण

# परमात्मा शिव ज्योति-बिन्दु स्वरूप है INCORPOREAL GOD & HIS ATTRIBUTES



भगवान कहते हैं :- 'हे वत्सो ! मैं नाम से न्यारा या सर्वव्यापी नहीं हूँ बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त स्वरूप ज्योति-बिन्दु है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति' भी कहलाता हूँ। अब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके पुनः सच्चा गीता-ज्ञान और सहज राजयोग सिखा रहा हूँ और सतयुगी देवी स्वराज्य की स्थापना करा रहा हूँ। अतः अब आप पूर्ण पवित्र बनो और राजयोगी बनो तो मैं आपको 21 जन्मों के लिये आने वाली देवी सृष्टि (वैकुण्ठ; स्वर्ग) में राज्य और भाग्य का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार दूँगा।'

प्रायः सभी मनुष्य परमात्मा को 'हे पिता', 'हे दुःखहर्ता और सुखकर्ता प्रभु', (O Heavenly God Father) इत्यादि सम्बन्ध-सूचको शब्दों से याद करते हैं। परन्तु यह कितने आश्चर्य की बात है कि जिसे वे 'पिता' कहकर पुकारते हैं उसका सत्य और

स्पष्ट परिचय उन्हें नहीं है और उसके साथ उनका अच्छी रीती स्नेह और सम्बन्ध भी नहीं है | परिचय और स्नेह न होने के कारण परमात्मा को याद करते समय भी उनका मन एक ठिकाने पर नहीं टिकता |इसलिए, उन्हें परमपिता परमात्मा से शान्ति तथा सुख का जो जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त होना चाहिए वह प्राप्त नहीं होता | वे न तो परमपिता परमात्मा के मधुर मिलन का सच्चा सुख अनुभव कर सकते हैं, न उससे लाईट (Light प्रकाश) और माईट (Might शक्ति) ही प्राप्त कर सकते हैं और न ही उनके संस्कारों तथा जीवन में कोई विशेष परिवर्तन ही आ पाता है | इसलिए हम यहाँ उस परम प्यारे परमपिता परमात्मा का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं जो कि स्वयं उन्होंने ही लोक-कल्याणार्थ हमें समझाया है और अनुभव कराया है और अब भी करा रहे हैं |

## परमपिता परमात्मा का दिव्य नाम और उनकी महिमा

परमपिता परमात्मा का नाम 'शिव' है | 'शिव' का अर्थ 'कल्याणकारी' है | परमपिता परमात्मा शिव ही ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द ए सागर और प्रेम के सागर हैं| वह ही पतितों को पावन करने वाले, मनुष्यमात्र को शांतिधाम तथा सुखधाम की राह दिखाने वाले (Guide), विकारों तथा काल के बन्धन से छुड़ाने वाले (Liberator)और सब प्राणियों पर रहम करने वाले (Merciful) है | मनुष्य मात्र को मुक्ति और जीवनमुक्ति का अथवा गति और सद्गति का वरदान देने वाले भी एक-मात्र वही है | वह दिव्य-बुद्धि के डाटा और दिव्य-दृष्टी के वरदाता भी है | मनुष्यात्माओ को ज्ञान रूपी सोम अथवा अमृत पिलाने तथा अमरपद का वरदान देने के कारण 'सोमनाथ' तथा 'अमरनाथ' इत्यादि नाम भी उन्ही के हैं | वह जन्म-मरण से सदा मुक्त, सदा एकरस, सदा जगती ज्योति, 'सदा शिव' है |

## परमपिता परमात्मा का दिव्य-रूप

परमपिता परमात्मा का दिव्य-रूप एक 'ज्योति बिन्दु' के समान, दीये की लौ जैसा है | वह रूप अतिनिर्मल, स्वर्णमय लाल (Golden Red) और मन-मोहक है | उस दिव्य ज्योतिर्मय रूप को दिव्य-चक्षु द्वारा ही देखा जा सकता है और दिव्य-बुद्धि द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है | परमपिता परमात्मा के उस 'ज्योति-बिन्दु' रूप की प्रतिमाएं भारत में 'शिव-लिंग' नाम से पूजी जाती है और उनके अवतरण की याद में 'महा शिवरात्रि' भी मनाई जाती है |

## 'निराकार' का अर्थ

लगभग सभी धर्मों के अनुयायी परमात्मा को 'निराकार' (Incorporeal) मानते हैं | परन्तु इस शब्द से वे यह अर्थ लेते हैं कि परमात्मा का कोई भी आकार (रूप) नहीं है | अब परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि ऐसा मानना भूल है | वास्तव में 'निराकार' का अर्थ है कि परमपिता 'साकार' नहीं है, अर्थात् न तो उनका मनुष्यों जैसा स्थूल-शारीरिक आकार है और न देवताओं-जैसा सूक्ष्म शारीरिक आकार है बल्कि उनका रूप अशरीरी है और ज्योति-बिन्दु के समान है | 'बिन्दु' को तो 'निराकार' ही कहेंगे | अतः यह एक आश्चर्य जनक बात है कि परमपिता परमात्मा है तो सूक्ष्मतिसूक्ष्म, एक ज्योति-कण है परन्तु आज लोग प्रायः कहते हैं कि वह कण-कण में है |